Vol-17, January-June 2023

ISSN : 2319-7137
IIFS
IMPACT FACTOR
5.125

INTERNATIONAL Literary Quest

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Prof. Ashok Singh
(Editor in Chief)

Dr. Vikash Kumar
(Editor)

Dr. Surendra Pandey
(Editor)

Vol. 17 January – June 2023 ISSN: 2319-7137 Impact Factor: 5.125

INTERNATIONAL LITERARY QUEST

[An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal]

Chief Editor
Prof. Ashok Singh
Editors
Dr. Vikash Kumar
Dr. Surendra Pandey

Published by
Ygantar Prakashan
D-750, Gali No. 04, Ashok Nagar
Shadara New Delhi 110093

Printed by
Akhand Publishing House, Delhi (India)
L-9/A, First Floor, Street No.42, Sadatpur Extension, Delhi
Mob. 9968628081, 9555149955, 9013387535 Email: akhandpublishing@yahoo.com

Note: The responsibility of the facts given and opinions expressed in articles of journal is solely that of individual author and not to the publisher.

Email:internationalliteraryquest@gmail.com,Website:https://internationalliteraryquest.com/

12. आज का मीडिया और हिन्दी साहित्य 94
—*संगीता कुमारी*

13. वर्तमान परिदृश्य और आत्महत्या के विरूद्ध 102
—*डॉ. विनय कुमार शुक्ला*

14. सारनाथ सिंहशीर्ष स्तम्भ (मौर्यकालीन कलाकृति के सन्दर्भ में) 109
—*कोमल*

15. पूर्व मध्यकाल में शूद्रों की स्थिति और वैश्यों और शूद्रों की सापेक्ष की स्थिति में परिवर्तन 114
—*मितराम वर्मा*

16. श्रीमद्भगवदगीता में प्रतिपादि स्वधर्म का वर्तमान में प्रासंगिकता 121
—*अंजलि उपाध्याय*

17. भूमण्डलीकरण के दौर में बिहार की सामाजिक संरचना : एक अवलोकन 126
—*डॉ० रॉली कुमारी*

18. रघुवीर सहाय की रचनाओं में लोकतंत्र 131
—*डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय*

19. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके समायोजन क्षमता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन 142
— **डॉ० देवेन्द्र यादव, **संदीप कुमार यादव*

20. क्षेत्र के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन 152
—**अखिलेश कुमार यादव, **डॉ० अरविन्द कुमार मौर्य*

21. सूफीमत में अन्य धर्मों की सादृश्यता का दर्शन 162
—*राजकुमार*

22. युवा संस्कृति के बदलते प्रतिमान 168
—*रितेश वर्मा*

23. भीष्म साहनी की कहानी कला: संदर्भ और प्रकृति (विशेष संदर्भः चीफ की दावत और वांगचू) 176
—*डॉ. शेफालिका शेखर*

वर्तमान परिदृश्य और आत्महत्या के विरूद्ध

डॉ. विनय कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक
शासकीय रामानुज प्रताप सिंहदेव
स्नाकोत्तर महाविद्यालय, बैकुण्ठपुर
कोरिया (छत्तीसगढ़)

वर्तमान साहित्यिक घटाटोप और सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों के मझधार में प्रेमचन्द का यह कथन बरबस ध्यान आकर्षित करता है कि हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का का प्रकाश हो जो इसमें गति और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है। साहित्य और उसमें भी कविता चलताऊ रपट कर्म नहीं जिसे जब चाहे लिख बोल के जी हल्का कर लिया। वह बाह्य और अंतरतम का सुन्दर प्रकटीकरण है। यह दौर खबरों की भीषणतम् आवाजाही का दौर है। जहां सिर्फ और सिर्फ खबर है और उसके भीतर की चीख दब सी गई है या यों कहें कि जानबूझकर दबा दी गई है। हमें यूं लगता है कि हम आस-पास होने वाली घटनाओं से वाकिफ हैं पर उस घटना के घटित होने की जो प्रक्रिया है उससे हम बेखबर हैं। इस संदर्भ में रघुबीर सहाय की कविताएं एक आम मतदाता की हालत का मुकम्मल बयान पेश करती हैं। समय बीतने के साथ रघुबीर सहाय की कविताओं की प्रासंगिकता बढ़ती ही जा रही है। आज जब वर्तमान समाज व्यवस्था के बीच आम लोगों का मानवीय गरिमा के साथ जीना लगभग असंभव हो गया है इस स्थिति में रघुबीर सहाय की कविताएं पहले इस जीवन-विरोधी स्थिति की पहचान कराती हैं, फिर उससे मठभेड़ के लिए हमें शक्ति देती हैं। भारतीय लोकतंत्र की महान परिकल्पना जिस मतदान आधारित तंत्र व्यवस्था के आधार पर कायम हुई वहां मतदाता भ्रष्टाचार और अभिव्यक्ति न कर पाने की घुटन के बीच इस कदर चाँप कर रख दिया गया है जहां स्वाधीनता शब्द बेमानी है-

बाँध में दरार
पाखण्ड वक्तव्य में
घटतौल न्याय में
मिलावट दवाई में

**First Author, **Corresponding Author, ***Co-Author*

नीति में टोटका
अहंकार भाषण में
आचरण में खोट हर हफ्ते मैंने विरोध किया
सचमुच स्वाधीन हो जाने का इतना भय
एक दास जाति में।[1]

'आत्महत्या के विरूद्ध' शीर्षक संग्रह की कविताएं सरसरी तौर पर खबरों की रपट मालूम पड़ती है। पर यह खबर सिर्फ खबर न होकर समाज में मनुष्य की बदलती जीवन-स्थितियों की तलाश है। जहाँ समाज-व्यवस्था के बीच साधारण मनुष्य अरक्षित और असहाय होकर भी मानवीय गरिमा हेतु संघर्ष करने को तैयार है। संग्रह का प्रकाशन वर्ष (1967) आजादी के बाद के बीस बरसों की बद से बदतर हो जाने की कहानी बयां करता है। वे कौन से हालात हैं जिन्होंने इन बीस बरसों के दरम्यान आम मतदाता को उसकी आशाओं और आकांक्षाओं से परे धकेलकर नारकीय जीवन या गुलाम की जिंदगी जीने को बाध्य किये हुए हैं। जहाँ असहायता और भयावहता का साम्राज्य पसरता जा रहा-

बीस वर्ष
खो गये भरमे उपदेश में
एक पूरी पीढ़ी जनमी पली पुसी क्लेश में
बेगानी हो गयी अपने ही देश में
वह
अपने बचपन की
आजादी
छीनकर लाऊँगा।

फिर बीस साल बाद
एक संयोग से
मैं वह कहूंगा जो
बीस साल से सच था

बीस साल
धोखा दिया गया
वहीं मुझे फिर कहा जायेगा विश्वास करने को[2]

*First Author, **Corresponding Author, ***Co-Author

खबरों का आलम यह है कि जीते जी आम मनुष्य की स्थिति-परिस्थिति कोई खबर नहीं। जहां अभावग्रस्त लोगों की मृत्यु ही खबर बन पाती हे लेकिन लगातार मृत्यु की ओर बढ़ती उनकी जीवन परिस्थितियाँ खबर नहीं बन पाती। रघुवीर सहाय की कविताओं में यह खबरधर्मिता सर्जनात्मक है। रघुवीर सहाय का पत्रकारिता से गहरा नाता रहा है, इस कारण कभी-कभी उनकी कविता पर अखबारी भाषा की बात भी चलताऊ ढंग से चेंप दी गई है। पर वे पत्रकार और साहित्यकार की हकीकत से पूर्णत: वाकिफ है, उनकी सीमाओं और क्षमताओं के साथ। बकौल रघुवीर सहाय-"पत्रकार और साहित्यकार में कोई अंतर है क्या? मैं मानता हूँ कि नहीं। इसलिए नहीं कि साहित्यकार रोजी के लिए अखबार में नौकरी करते हैं, बल्कि इसलिए कि पत्रकार और साहित्यकार दोनों नये मानव-संबंधों की तलाश करते हैं। दोनों ही दिखाना चाहते हैं कि दो मनुष्यों के बीच नया संबंध क्या बना। दोनों के उद्देश्य में पूर्ण समानता है। कृतित्व में समानता कमोबेश है। पत्रकार जिन तथ्यों को एकत्र करता है उनको क्रमबद्ध करते हुए उन्हें उस परस्पर संबंध में विच्छिन्न नहीं करता जिससे कि वे जुड़े हुए और क्रमबद्ध है। उसके ऊपर तो वह लाजमी होता है कि वह आपको तर्क से विश्वस्त करे कि यह हुआ तो यह इसका कारण है, ये तथ्य है, और यह समय, देश, काल परिस्थिति आदि जिनके कारण ये तथ्य पूरे होते हैं। साहित्यकार इससे भिन्न कुछ करता है। साहित्यकार के लिए तथ्यों की जानकारी उतनी ही अनिवार्य है जितनी पत्रकार के लिए है परंतु उन तथ्यों का गतानुगत क्रम उसके लिए अवश्य नहीं है, वह उसको उलट-पुलट सकता है। पत्रकार के लिए यथार्थ वही है जो संभव हो चुका है। साहित्यकार के लिए वह है जो संभव हो सकता है।[3]

रघुवीर सहाय पत्रकारिता और कवि के बीच संबंधों को लेकर सतर्क है। इसी कारण मुश्किलें भी उनके सामने बार-बार आती है। जहाँ उनके लिए सबसे मुश्किल और एक ही सही रास्ता है कि मैं सब सेनाओं में लड़ूँ-किसी में ढ़ाल सहित किसी में निष्कवच होकर मगर अपने को अन्त में मरने सिर्फ अपने मोर्चे पर हूँ। अपने भाषा के शिल्प के और उस दो तरफा जिम्मेदारी के मोर्चे पर जिसे साहित्य कहते हैं। उनके यहाँ हर रचना सपना अपने व्यक्तित्व को बिखरने से बचाने का प्रयत्न है।[4]

'आत्महत्या के विरूद्ध' शीर्षक कविताएं भारतीय राजनीति के लहराते जंगल से हमें रूबरू कराती हैं। आज राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र से समाज का कोई भी अंग अछूता नहीं। जनता के प्रतिनिधि जनता से ही बेखबर है संसद से लेकर सड़क तक जितनी लोकतांत्रिक प्रतिनिधि संस्थाएं है उनका जनता की समस्यओं से कुछ लेना-देना नहीं है। हालात यहाँ यह है -

सिंहासन ऊँचा है सभाकक्ष छोटा है
अगणित पिताओं के
एक परिवार के
मुंह बायें बैठे हैं लड़के सरकार के

लूले काने बहरे विविध प्रकार के
हल्की सी दुर्गन्ध से भर गया है सभाकक्ष[5]

नेता, पदाधिकारियों का हर दिन मनुष्यय से एक दर्जा नीचे रहने वालों की जमात के दर्द से कोई वास्ता नहीं है। यहाँ आम आदमी की मौत भी तमाशा है। ऐसी परिस्थिति में कवि की जद्दोजहद राजनीतिक विद्रूप के तहत उपजी उस अमानवीय स्थिति से पाठकों को रूबरू कराना है। पर यह रूबरू होना किसी धमाके की तरह न होकर एक सधे ढंग से है। कवि के अनुसार "मैं उन लोगों के बारे में बहुत आश्वस्त नहीं हूँ जो कि कहते हैं कि आप असहमति इस धमाके से करिये कि आप मर जायें- बिना कोई बात कहें और वहीं तमशा सब देखें।"[6] यह अनायास नहीं कि-

कितना अच्छा था छायावादी
एक दुख लेकर वह एक गान देता था
कितना कुशल था प्रगतिवादी
हर दुख का कारण वह पहचान लेता था
कितना महान था गीतकार
जो दुख के मारे अपनी जान लेता था
कितना अकेला हूँ मैं इस समाज में
जहाँ सदा मरता है एक और मतदाता।[7]

इस भारतीय आम मतदाता की जद्दोजहद रघुवीर सहाय के रचना केन्द्र में है। जहाँ हालात ये वन चुके हैं कि इस देश में स्वाधीनता शब्द का अवमूल्यन तंत्र के स्तर पर हुआ है। तंत्र को स्वाधीन व्यक्ति से परहेज है, क्योंकि स्वाधीन व्यक्तियों की अधिकता किसी भी तरह से सत्ता के हित में नहीं। वहाँ तो शर्त ही यह है कि आप मुझे अपनी स्वाधीनता दीजिए हम आपको नागरिकता का दर्जा देंगे। जाहिर तौर पर हम अपनी आजादी का एक हिस्सा इसलिए देते हैं कि वह समाज का और राज्य का प्रवंध करे, तो इस प्रकार सत्ता के और हमारे बीच में एक रिश्ता बनता है। वह हमेशा तनाव का रिश्ता होगा और जनता इस रिश्ते को समझ नहीं पाती या उसे इस रिश्ते को समझने नहीं दिया जाता। कवि का सव कुछ के बावजूद इस जनता से एक खास रिश्ता है-

"क्योंकि आज भाषा ही मेरी एक मुश्किल नहीं रही
एक मेरी मुश्किल है जनता
जिससे मुझे नफरत है सच्ची और निस्संग
जिस पर कि मेरा क्रोध बार-बार न्योछावर होता है।
हो सकता है कि कोई मेरी कविता आखिरी कविता हो जाये
मैं मुक्त हो जाऊँ।"[8]

यह मुक्ति की छटपटाहट एक सहृदय कवि के मन में व्याप्त वह टीस है जो आम जतना के दु:ख-दर्द से उपजी है। पर यहाँ असहायता नहीं बल्कि समाज और सत्ता में व्याप्त आतंक से मुठभेड़ है। साथ ही एक उद्धाम जिजिविषा भी भविष्य की सार्थकता के प्रति। रघुवीर सहाय के चिंतन क्रम में समाज को समझने-बुझने की प्रक्रिया इतनी गहन है कि वहाँ समाज को समझने का मतलब यह है कि समाज के मनुष्य और मनुष्य के बीच जितने गैर-इंसानी रिश्ते हैं उनकी समझ और कहाँ से वे पैदा होते हैं उनकी समझ और उनकी जड़ों तक पहुँच, इतिहास की समझ। यह समझ ही कवि की अभिव्यक्ति को यह क्षमता देती है कि सत्ता की हनक और उसके आतंक के साधारण मतदाता पर पड़ने वाले प्रभाव को देख-दिखा सके जहाँ-

"कितना असान है नाम लिखा लेना
मरते मनुष्य के बारे में क्या करूँ क्या करूँ मरते मनुष्य का
अन्तरंग परिषद में पूछकर तय करना कितना
आसान है कितनी दिलचस्प है नेहरू की
आशंसा पाटिल की भर्त्सना कथा
कितनी घुटन के अन्दर घुटन के
अन्दर घुटन से कितनी सहज मुक्ति।"[9]

स्वाधीनता संग्राम भारत के अमा जन की मुक्ति का संग्राम था। तमाम सपने जोड़े और बुने गये थे आजाद भारत के लिए। पर आजादी के बाद के बीस बरसों के दरम्यान ही उसकी सींवन दरकने लगी। आधुनिक भारत को सजाने-संवारने के नाम पर बहुत सारी योजनाओं और राजनेताओं के भाषणों की घुट्टी भी इस होने वाले मोहभंग से निजात नहीं दिला पाई। हालात यह बने कि देश का बुद्धिजीवी तबका इसे लेकर इस कदर व्यथित है कि-

देश की व्यवस्था का विराट वैभव
व्याप्त है चारों ओर
एक कोने में दुबक ही तो सकता हूँ
सब लोग जो कुछ रचाते है उसमें
केवल अपना मत नहीं दे ही तो सकता हूँ
वह मैं करता हूँ
किसी से नहीं डरता हूँ
अपने आप और बेकार।"[10]

यह उस आजाद भारत की हकीकत है जिसे वैश्विक मानचित्र पर अभी आजाद हुए कुल बीस वर्ष हुए हैं और साधारण मतदाता सत्ता की भुलभुलैया में इस कदर भ्रमित हो चुका है कि वह दिन-प्रतिदिन

*First Author, **Corresponding Author, ***Co-Author

इस दमघोंटू माहौल में तिल-तिल मरने को विवश है। समाजवाद की बयार उस तक नहीं पहुंचती। चर्चा जरूर गरम है संसद से सड़क तक के सत्ता के गलियारों में कि आम जनता की फिक्र में वे किस कदर हलकान है। पर यह चर्चा है कैसी जहाँ-

"बीस बड़े अखबारों के प्रतिनिधि पूछे पचीस बार
क्या हुआ समाजवाद
कहे महासंघपति पचीस बार हम करेंगे विचार
आँख मारकर पचीस बार व हँसे वह, पचीस बार
हँसे बीस अखबार
एक नयी ही तरह की हँसी यह है।[11]

यह हँसी दशहत पैदा करती है। राजनीतिक गलियारों में होने वाली चर्चा का आम जनता से कोई वास्ता नहीं। रघुवीर सहाय उन चंद कवियों में से है जहाँ स्वाधीनता के विद्रूप के बीच उनकी रचना आकार लेती है। आत्महत्या एक गुमनामी की चुपचाप होने वाली कार्यवाही है। जिसे गोल-मटोल शब्दों द्वारा सभ्य समाज में फारिग कर दिया जाता है। पर यह आत्मकथा कितनी महीन और सोची-समझी प्रक्रिया है कवि की सतर्क निगाह इस पर है। सिर्फ सांसो का रूक जाना या देंह का मिटना ही आत्महत्या नहीं वरन् आत्महत्या तो वह भी है जहाँ लोग जिंदा लाश की तरह बुत बने चुपचाप स्वयं को नियति के हवाले कर देते हैं। पर यह नियति शब्द खोखला है राज-समाज द्वारा आम जनता पर आरोपित किया गया है। आत्महत्या के इस पाखंड के खिलाफ, आम जनता को तिल-तिल कर मरने की ओर अग्रसर करने वाली सत्ता के खिलाफ कवि का प्रतिरोध इस कदर है कि-

कुछ होगा कुछ होगा अगर मैं बोलूंगा
न टूटे न टूटे तिलिस्म सत्ता का मेरे अन्दर एक कायर
टूटेगा टूट
मेरे मन टूट एक बार सही तरह
अच्छी तरह टूट झूठमूठ अब मत रूठ।[12]

रघुवीर सहाय के यहाँ समाज और राजनीति में भीतर-भीतर चल रही साजिश को खबर की शक्ल में पेश किया गया है पर वह खबर मात्र सूचना प्रदान करने तक ही सीमित नहीं। वरन् वहाँ घटनाओं के घटने के कारणों की तलाश है। एक ऐसा समाज जहाँ आजादी सिर्फ अभिजत वर्ग एक सीमित होकर रह गई है और एक आम मतदाता रोज मरने को बजबूर है। यह मजबूरी क्यों और किन दबावों के चलते उत्पन्न हो रही, रघुवीर सहाय की कविता इसका मुकम्मल बयान है। देश की विराट एवं भव्य व्यवस्था से उत्पन्न वैभव किस कदर आम जन को दिग्भ्रम की स्थिति में डाले हुए हैं उनकी रपट है रघुवीर सहाय की कविता।

संदर्भ सूची

1. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 84
2. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 18, 83, 2
3. लिखने का कारण, रघुवीर सहाय, पृ. 177
4. आत्मकथा के विरूद्ध, भूमिका
5. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 16-17
6. पूर्वग्रह, अंक नवम्बर-दिसम्बर 1976, पृ. 30
7. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 69
8. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 71
9. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 22
10. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 11
11. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 12
12. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 20

*First Author, **Corresponding Author, ***Co-Author